बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग एवं
दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में

"सांख्य का दार्शनिक पक्ष और योग का चित्त-मनोविज्ञान"

विषय पर राष्ट्रीय वेबीनार

दिनांक **26**, मार्च, **2021** शुक्रवार

:: शुभारम्भ एवं प्रथम सत्र प्रातः **11:00** बजे ::

डॉ. हुकम सिंह (मुख्य अतिथि)
प्राचार्य, राजर्षि राजकीय महाविद्यालय, अलवर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा (मुख्य वक्ता)
सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

:: द्वितीय सत्र प्रातः **12:25** बजे ::

प्रो. सुशिम दुबे (मुख्य वक्ता)
प्रोफेसर दर्शनशास्त्र विभाग,
नव नालन्दा महाविहार सम विश्वविद्यालय, नालन्दा (बिहार)

आयोजन समिति

डॉ. बी.आर. शास्त्री	डॉ. प्रतिमा खोस्या
डॉ. इन्दिरा गुप्ता	डॉ. दीप्ति राठौर
डॉ. उषा नागर	डॉ. सरोज मीणा
डॉ. योगिता मकवाना	डॉ. सुधा सिंह

तकनीकि समिति

डॉ. महेश चन्द्र गोठवाल — श्री एन. राजेन्द्र

प्राचार्य एवं संरक्षक	संयोजक एवं विभाग प्रभारी (संस्कृत)	संयोजक एवं विभाग प्रभारी (दर्शनशास्त्र)
डॉ. रेखा शर्मा	डॉ. जे.सी. नारायणन्	डॉ. रेखा यादव

बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग एवं दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में

"सांख्य का दार्शनिक पक्ष और योग का चित्त-मनोविज्ञान" विषय पर राष्ट्रीय वेबीनार

संस्कृत विभाग :

राजकीय कला महाविद्यालय अलवर में संस्कृत विभाग की स्थापना **1952** ई. में हुई। स्नातकोत्तर कक्षाएं **1976** ई. से प्रारम्भ हुई। लगभग **600** विद्यार्थियों के साथ यह महाविद्यालय का प्रतिष्ठित विभाग है। यहाँ की विद्वद् परम्परा में बहुश्रुत व लब्धप्रतिष्ठ प्राध्यापकों ने महनीय योगदान दिया है। वर्तमान में यहाँ **9** प्राध्यापक कार्यरत हैं जो विभिन्न अनुशासनों के अध्येता, अध्यापक तथा अनुसंधाता हैं। विभाग द्वारा यू.जी.सी. की विविध लघु व वृहद शोध-परियोजनाएं सफलतया सम्पादित की गई हैं। विभाग में **18** शोधार्थी पीएच.डी. हेतु पंजीकृत हैं तथा **40** शोधार्थियों को पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

दर्शनशास्त्र विभाग :

महाविद्यालय में दर्शनशास्त्र विभाग भी अपने विविध अनुशासनों एवं ज्ञान वैदुष्य से महाविद्यालय का आधार स्तम्भ रहा है। इसमें विभिन्न विद्वानों ने अपने अनुभव एवं अध्यापन से कीर्तिमान स्थापित किए हैं। वर्तमान में डॉ. रेखा यादव इस विभाग की अध्यक्षा हैं तथा समयानुसार दर्शनशास्त्र के विषय प्रोन्नत करने में निरन्तर प्रयासरत रहती हैं।

विषय परिचय :

प्रत्येक समाज और राष्ट्र के लिए अपनी समस्याओं के समाधान यदि लोक व्यवहार में प्रचलित धारणाओं से किए जाएं तो समाधान का मार्ग अधिक सुगम हो जाता है। जिस प्रकार से बाहरी एवं आंतरिक अशांति और संघर्ष मानव जीवन को कलुषित कर रहा है। ऐसे समय में अपनी परंपरा में उपलब्ध समाधानों की ओर देखना युक्ति युक्त है। इसी उद्देश्य से बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय के स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग और स्नातक दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय वेबीनार "सांख्य का दार्शनिक पक्ष और योग का चित्त मनोविज्ञान" विषय पर आयोजित की जा रही है।

दर्शन अवधारणात्मक चिंतन है और मानव जीवन अवधारणाओं की जिस समझ के आधार पर संचालित होता है उसी से उस संस्कृति की पहचान बनती है और लोकजीवन उन मूल्यों से संचालित होता है। सांख्य दर्शन को भारतीय चिंतन परंपरा में प्राचीनतम दर्शन के रूप में स्वीकारा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भारतीय चिंतन के जिस काल में वैदिक तत्ववाद का व्यवस्थित सूत्रपात नहीं हुआ था उस काल में दर्शन के प्रयास के रूप में पहली झलक सांख्य चिंतन की दिखाई देती है। सांख्य दर्शन को एक स्वतंत्र चिंतन परंपरा के रूप में देखा गया है जिसकी विशिष्ट धारणाएं हैं जैसे प्रकृति-पुरुष द्वैतवाद, त्रिगुणात्मक प्रकृति, प्रकृति का अव्यक्त-व्यक्त स्वरूप, अनेक पुरुषों की धारणा, सर्ग और कैवल्य।

इन धारणाओं का विस्तार और सांख्य पदावली का प्रयोग पुराण, धर्मशास्त्र, कानून, वैद्यक शास्त्र, योग और तंत्र के साथ-साथ लोक व्यवहार में भी प्रचलित रहा है। यही कारण है कि महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज इसे प्राचीनतम दर्शन कहने की बजाय भारत का दर्शन कहना अधिक उपयुक्त समझते हैं। सांख्य दर्शन की विशेषता वास्तववादी और अध्यात्मवादी दर्शन की स्वतंत्र परंपरा के रूप में है। बहुधा आध्यात्मिक दर्शन को लोक जीवन का निषेध माना जाता है परंतु सांख्य दर्शन लोक जीवन के अनुभवों की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए उसका गहरा विश्लेषण प्रस्तुत करता है और शुद्ध ज्ञान मार्ग से दुःख निवृत्ति का मार्ग दिखाता है। शुद्ध ज्ञान मार्ग का महर्षि कपिल का यह मार्ग निरीश्वर सांख्य कहलाता है। सांख्य दर्शन के सैद्धान्तिक मार्ग में व्यावहारिकता की कमी को योग दर्शन पूरा करता है। महर्षि पंतजलि का मार्ग सेश्वर सांख्य कहलाता है। भारतीय दर्शन में दार्शनिक चिंतन का उद्देश्य दुःख निवृत्ति है और जब बाह्य जीवन की प्रवृत्तियों से इच्छाओं एवं आकांक्षाओं का समाधान नहीं होता तो अंतर्मुखी प्रवृत्ति ही आवश्यक हो जाती है परंतु अंतर्मुखी प्रवृत्ति को जीवन में उतारने के लिए साधना की आवश्यकता है और इस साधना के लिए मन के या चित्त के मनोविज्ञान को जानना आवश्यक हो जाता है। योग दर्शन चित्त वृत्तियों के संसार का विस्तृत विश्लेषण करने के साथ इसे नियंत्रित करने का अनुशासन सिखाता है।

बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग एवं
दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में

सांख्य का दार्शनिक पक्ष और योग का चित्त-मनोविज्ञान

विषय पर राष्ट्रीय वेबीनार

कार्यक्रम रूपरेखा

शुभारम्भ एवं प्रथम सत्र

प्रात: **11.00** बजे : प्राचार्य एवं मुख्यातिथि द्वारा माँ सरस्वती को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन तथा मुख्यातिथि, प्राचार्य एवं अतिथियों का स्वागत एवं विभाग प्रगति रिपोर्ट - डॉ. जे.सी. नारायणन्

प्रात: **11.10** बजे : प्राचार्य सम्बोधन

प्रथम सत्र

प्रात: **11.15** बजे : मुख्य अतिथि परिचय - डॉ. दीप्ति राठौर

प्रात: **11.20** बजे : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा का परिचय एवं स्वागत एवं विषय प्रवर्तन - डॉ. प्रतिमा खोस्या

प्रात: **11.35** बजे : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा का व्याख्यान

दोप. **12.20** बजे : प्रतिभागियों से प्रश्नोत्तर आमंत्रण तथा समाधान - डॉ. सरोज मीणा

द्वितीय सत्र

दोपहर **12.30** बजे : प्रो. सुशिम दुबे का परिचय एवं विषय प्रवर्तन - डॉ. रेखा यादव

दोपहर **12.35** बजे : प्रो. सुशिम दुबे का व्याख्यान

दोपहर **01.20** बजे : प्रतिभागियों से प्रश्नोत्तर आमंत्रण तथा समाधान - डॉ. योगिता मकवाना

दोपहर **01.30** बजे : मुख्य अतिथि द्वारा आशीर्वचन

दोपहर **01.40** बजे : धन्यवाद - डॉ. इन्दिरा गुप्ता

सम्पर्क सूत्र :

डॉ. जे.सी. नारायणन् **9414681040**

डॉ. बी.आर. शास्त्री **9414810265**

zoom

For Registration

Zoom Meeting